यूजीसी केयर लिस्ट–85
जुलाई–सितंबर 2021
वर्ष 11, अंक–23

मूल्य–100/-
ISSN NO. 2320-5733

समसामयिक सृजन

समकालीन साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति का संगम

समसामयिक सृजन

साहित्य, शिक्षा और संस्कृति का संगम

संरक्षक

डॉ. प्रभात कुमार

प्रधान संपादक एवं परामर्श

डॉ. रमा

संपादक

डॉ. महेन्द्र प्रजापति

संपादन सहयोग

रीमा प्रजापति

आवरण चित्र

डॉ. प्रेम प्रकाश मीणा

ले-आउट

हर्ष कंप्यूटर्स

संपादकीय कार्यालय

मकान नं. 189, ब्लॉक-एच
विकासपुरी, नई दिल्ली-110018

पत्राचार

एफ-114, तृतीय तल, SLF, वेद विहार
नियर : शंकर विहार ऑटो स्टैंड, लोनी
गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश-201102

सदस्यता

आजीवन : 5000/–रुपए
संपर्क : 9871907081
वेबसाइट : www.samsamyiksrijan.com
Email : samsamyik.srijan@gmail.com

प्रकाशन एवं मुद्रण

हरिन्द्र तिवारी

हंस प्रकाशन, दिल्ली
मो. : 7217610640, 9868561340
ईमेल : hansprakashan88@gmail.com
वेबसाइट : www.hansprakashan.com

पृ.सं.

- **प्रवासी साहित्य : वर्तमान संदर्भ** : *प्रो. खेमसिंह डहेरिया* 5
- **भारत में डिजिटल मीडिया को नियोजित करने की आवश्यकताएँ एवं प्रयास** : *डॉ. परमवीर सिंह* 8
- **'गिलिगडु' में अपनत्व खोजती वृद्ध जिंदगियाँ** : *डॉ. अनिता प्रजापत* 12
- **हिंदी कविता में अभिव्यक्ति का स्त्री पक्ष** : *डॉ. अरुंधति* 15
- **भूमंडलीकरण के युग में सामाजिक आर्थिक परिवर्तन एक शोध परक अध्ययन** : *डॉ. धर्मेंद्र कुमार खटीक* 18
- **कॉविड-19 महामारी के दौरान नव-माध्यमों के द्वारा स्वास्थ्य संचार का अध्ययन** : *डॉ. भारती बतरा* 21
- **डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचारों में सामाजिक समरसता एवं विद्वानों की राय का अध्ययन** : *डॉ. जयपाल मेहरा* 26
- **भारत में महिला सशक्तिकरण के प्रयास** : *सरिता सारस्वत* 29
- **"मानवीय मूल्यों के आलोक में राष्ट्रीय मानव अधिकार की प्रांसगिकता"** : *कृष्णदेव राय* 32
- **भारतीय राजनीति में सांप्रदायिकता का एक अध्ययन** : *डॉ. राहुल कुमार पासवान* 35
- **बिहार और पिछड़ावाद की राजनीति का एक अवलोकन** : *अर्चना कुमारी* 38
- **प्राचीन काल में संचार व्यवस्था एवं सामाजिक संबद्धता का एक अवलोकन** : *डॉ. विवेक कुमार* 42
- **भारतीय विदेश नीति का सैद्धांतिक एक अवलोकन** : *सुधांशु शेखर* 45
- **बिहार में महिलाएँ प्रशासनिक स्वालंबन की राह पर** : *सौरभ सुमन* 48
- **हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत-अमेरिका संबंध** : *डॉ. गौरव कुमार शर्मा* 51
- **जलवायु परिवर्तन : दक्षिण पूर्वी राजस्थान में वर्षा का बदलता स्वरूप** : *हंसा मीणा* 54
- **"राजस्थान के पुलिस प्रशासन में कांस्टेबुलरी की भूमिका"** : *राहुल वर्मा* 57
- **श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संकलित संतों का सामाजिक दृष्टिकोण** : *मनजीत कौर* 60
- **'मुझे चाँद चाहिए' में नारीचेतना** : *डॉ. सतीश कुमार पांडेय* 62
- **'जल टूटता हुआ' उपन्यास में सामाजिक समस्याएँ** : *डॉ. जितेंद्र कुमार सिंह* 65
- **मंगलेश डबराल की कविता में बिंब विधान** : *केशव यादव* 68
- **मीडिया के सामाजिक और आर्थिक पहलूका अध्ययन** : *विक्रम गावडिया* 71

स्वामी, प्रकाशक, सम्पादक, मुद्रक तथा स्वत्वाधिकारी : *डॉ. महेन्द्र प्रजापति द्वारा एच.-ब्लॉक, मकान नं. 189, विकासपुरी, नई दिल्ली-110018 से प्रकाशित।*

- राजकमल चौधरी की कहानियों में 'स्त्री' के विविध रूप : *अजीत सिंह* 75
- सांप्रदायिकता की करुण कथा 'त्रिशूल' *सीमा दूबे* 78
- नरेंद्र कोहली और उनकी 'राम' विषयक दृष्टि *डॉ. नीता त्रिवेदी* 81
- हिंदी पत्र-पत्रिकाओं में आदिवासी विमर्श *सुनीता मीणा* 85
- आधुनिक कथा-साहित्य में जीवन के विविध रूप : *डॉ. तारावती मीना* 88
- महादेवी वर्मा के गद्य में शैली-विविधता *डॉ. करतार सिंह-राजकुमार मीना* 91
- साहित्य आधारित सिनेमा और 'शतरंज के खिलाड़ी' : दिनेश चंद्र सरस्वा 95
- 'डाउनलोड होते हैं सपने' कहानी संग्रह में चित्रित मानवीय सरोकार : *अर्चना यादव-डॉ. जयकरण यादव* 98
- "भारतीय राजनीति में महिला सशक्तिकरण एवं सुषमा स्वराज" : *ऋतु डॉ. उर्मिला* 102
- समकालीन हिंदी कविता में विविध विमर्श : एक अनुशीलन : *प्रदीप कुमार ठाकुर* 105
- महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन की समसामयिक प्रासंगिकता : *संदीप* 108
- विश्व में प्रचलित हिंदी लोक गीतों में भारतीय संस्कृति का उद्घोष *डॉ. कविश्री जायसवाल* 111
- जलावतन में विस्थापन और युद्ध की विभीषिका : *डॉ. महावीर सिंह वत्स* 116
- शिक्षा व्यवस्था : प्राचीन भारत के विशेष संदर्भ में : *डॉ. हेमा कुमारी महर-महीप कुमार मीणा* 119
- दिनकर का युद्ध विषयक चिंतन : *डॉ. मीनू कुमारी* 123
- अफगानिस्तान में गंभीर मानवीय संकट और कोविड-19 महामारी : *डॉ. मोहन लाल जाखड़* 127
- वर्तमान युग में तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता एवं उपादेयता : *डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट* 130
- इंटरनेट पर पसंदीदा भाषा बन रही है हिंदी *डॉ. प्रदीप तिवारी* 133
- 'मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में स्त्री-विमर्श' *डॉ. हेमवती शर्मा* 137
- भारतीय समाज में स्त्री की यातना, संघर्ष और विद्रोह के आयाम 'छिन्नमस्ता' *डॉ. नीरव अडालजा* 140
- राजस्थानी लोककथाओं में जनजाति और खानाबदोश समुदाय : *डॉ. गीता सामौर* 144
- नैतिकता और काव्य : *डॉ. कविता त्यागी* 146
- डॉ. कैलाश चंद शर्मा शंकी कृत 'मेरे राम तेरा नाम' कविता में रामकथा : *प्रो. मन्जुनाथ एन. अंविग* 148
- सनसनीखेज पत्रकारिता का नया रूप : पीत पत्रकारिता एक विश्लेषणात्मक अध्ययन *डॉ. संजय सिंह बघेल* 152
- आत्मनिर्भर महिलाओं के निर्माण में यूट्यूब की भूमिका : *डॉ. बिजेंद्र कुमार* 155
- अंबेडकर संपादित मूकनायक पत्रिका और दलित आंदोलन : *डा. प्रदीप कुमार-डा. सोमा कुमारी* 159
- कंदलि रामायण में अभिव्यक्त वैष्णव भक्ति का स्वरूप : *डॉ. रीतामणि वैश्य* 163
- 'निराला' की छायावादी दृष्टि : *डॉ. सीमा माहेश्वरी* 166
- दिलोदानिश में अभिव्यक्त पारंपरिक स्त्री चरित्रों का आलोचनात्मक अध्ययन : *पूजा राधा* 169
- 'अपने-अपने पिंजरे' : सामाजिक प्रतिरोध का ऊर्जस्वितस्वर *अब्दुल हासिम* 173
- 'गीतांजलि' का जीवन-दर्शन : *डॉ. ममता खाण्डल* 176
- 'हम उस जगह मिलेंगे जहाँ कोई अँधेरा नहीं है' : *कविता भाटिया* 179
- संबंधों की कशमकश है रघुवीर सहाय की कहानियाँ : *सत्यप्रकाश सिंह* 182
- नई सदी का हिंदी साहित्य *डॉ. अमृता सिंह* 186
- आत्मकथा 'दोहरा अभिशाप' में चित्रित दलित नारी जीवन : एक विश्लेषण *डॉ. नूरजहान रहमातुल्लाह* 188
- छायावाद में प्राकृतिक छटा *डॉ. इंदु कनौजिया* 190
- भारत में कुम्हार का ज्ञान और विकास की राजनीति : *अमित कुमार* 193
- दलित विद्रोह और सुशीला टाकभौरे के नाटक *डॉ. तारु एस. पवार* 196
- सूचना प्रौद्योगिकी के बदलते आयाम और सोशल मीडिया की भूमिका *हंसराज 'सुमन'* 199
- राष्ट्र के विकास में नारी की भूमिका *धर्मशीला कुमारी* 203
- भारतीय संसदीय प्रणाली में संविद सरकार– एक अध्ययन : *मधु कुमारी* 206

नरेंद्र कोहली और उनकी 'राम' विषयक दृष्टि

डॉ. नीता त्रिवेदी

साहित्य मानवीय चेतना का प्रतिफलन है। मनुष्य में उसकी चेतना ही वह शक्ति है जिससे वह अपने परिवेश का मूल्यांकन करता है। चेतना शब्द के पूर्व 'सामाजिक' पद के प्रयोग से 'सामाजिक चेतना' पद बनता है। सामाजिक चेतना-समाज की निर्बाध, अनवरत और विकासशील प्रवृत्ति है। सामाजिक चेतना सामाजिक परिवेश के संपर्क का परिणाम है। सामाजिक वातावरण ही नैतिकता और व्यावहारिकता के प्रतिमान सुनिश्चित करता है। यह चेतना ही मनुष्य के सामाजिक चरित्र को दिशा देती है।

सामाजिक चेतना का महत्त्वपूर्ण दायित्व है समाज को नूतन रूप प्रदान करना। ऐसा तभी संभव है जब रूढ़िवादी प्रवृत्तियों के कारण उत्पन्न विकृतियों का निराकरण कर दिया जाए। सामाजिक चेतना व्यक्ति को समझ तो देती ही है, सामाजिक उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए कर्म की प्रेरणा भी देती है। रचनाकार सामाजिक परिवेश से अनुभव ग्रहण करता है फिर अनुभूति की आंच में तपाकर उसे शब्द देता है और इस तरह समाज के प्रति अपने दायित्व को निभाता है।

ऐसे ही सामाजिक सरोकार के प्रति कटिबद्ध, आधुनिक युगबोध और राष्ट्र निर्माण के प्रेरक रचनाकार हैं–नरेंद्र कोहली। कोहली जी आधुनिक रचनाकार हैं। उनका लेखन आधुनिक युगबोध से संप्रेरित है। कोहली जी ने भारतीय चिंतन परंपरा को एक नवीन आलोक से प्रकाशित किया है। नरेंद्र कोहली का जन्म 6 जनवरी 1940 ईस्वी को स्यालकोट (अविभाजित पंजाब) में हुआ था। यह नगर अब पाकिस्तान में है। आप का निधन 17 अप्रैल 2021 को दिल्ली में हुआ। आपने 7 वर्ष की उम्र में विभाजन की त्रासदी को देखा। आपने दिल्ली के रामजस कॉलेज से एम.ए. (हिंदी) तथा पी-एच.डी. की उपाधि प्राप्त की तथा 1963 से 1965 तक आपने पी.जी.डी.ए.वी (सांध्य) कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। 1965 से 1995 तक आपने मोतीलाल नेहरू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय में अपनी सेवाएँ दी उसके पश्चात आपने अपने कॉलेज की नौकरी को छोड़ अपना संपूर्ण समय लेखन कर्म को दिया। तब से लेकर 81 वर्ष की अवस्था तक वे स्वतंत्र लेखक एवं चिंतक के रूप में साहित्य साधना से जुड़े रहे।

नरेंद्र कोहली आधुनिक युग के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार हैं। आपने हिंदी साहित्य की कई विधाओं यथा–उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध, आलोचना, व्यंग्य आदि के माध्यम से अपनी बहुमुखी लेखन प्रतिभा से पाठकों को चमत्कृत कर दिया है। आपके प्रमुख उपन्यास इस प्रकार हैं–राम कथा पर आधारित 'अभ्युदय' उपन्यास जो बाद में सात खंडों में पेपरबेक में प्रकाशित हुआ जिनके नाम इस प्रकार हैं–दीक्षा, अवसर, संघर्ष की ओर, साक्षात्कार, पृष्ठभूमि, अभियान और युद्ध। आपका महाभारत पर आधारित उपन्यास श्रंखला 'महासमर' है जो कि 8 भागों में यथा-बंधन, अधिकार, कर्म, धर्म, अंतराल, प्रच्छन्न, प्रत्यक्ष, निर्बंध आदि है। विवेकानंद के जीवन पर आधारित उपन्यास 'तोड़ो कारा तोड़ो' चार भागों की श्रंखला है–निर्माण, साधना, परिव्राजक तथा निर्देश। इसके अतिरिक्त अभिज्ञान, साथ सहा गया दुख, आतंक, पुनरारंभ, क्षमा करना जीजी, जंगल, न भूतो न भविष्यति, वसुदेव तथा वरुण पुत्री आदि आप के प्रसिद्ध उपन्यास हैं।

आप के प्रमुख कहानी संग्रह हैं–परिणति, कहानी का अभाव, दृष्टि देश में एकाएक, शटल, नमक का कैदी, निचले फ्लैट में..., संचित भूख, मेरी तेरह कहानियाँ, समग्र कहानियाँ (चार खंड में), दस प्रतिनिधि कहानियाँ। आप के प्रमुख व्यंग्य संग्रह हैं–एक और लाल तिकोन, पाँच एब्सर्ड उपन्यास, आश्रितों का विद्रोह, जगाने का अपराध, आधुनिक लड़की की चीख, त्रासदिया, परेशानियाँ, मेरे मोहल्ले का फूल, सबसे बड़ा सत्य, समग्र व्यंग्य (पाँच खंडों में)। आप के चर्चित नाटक हैं–शंबूक की हत्या, निर्णय रुका हुआ, हत्यारे, गारे की दीवार आदि। इसके अतिरिक्त कई संस्मरण, आत्मकथ्य, आलोचना, साक्षात्कार, बाल कथाएँ तथा बाल उपन्यास, यात्राएँ आदि पर आपने लेखनी चलाई है।

जिस प्रकार नरेंद्र कोहली का लेखन विविधता लिए हुए हैं, उसी प्रकार उनके सम्मान भी विविधता लिए हुए हैं। उन्हें अपने व्यंग्य के लिए सम्मानित किया गया, उनके नाटकों को भी पुरस्कृत किया गया, उनके उपन्यासों को भी। उन्हें वर्ष 2017 में भारत सरकार द्वारा 'पद्मश्री' पुरस्कार से सम्मानित किया गया। वर्ष 2012 में 'न भूतो न भविष्यति' उपन्यास पर उन्हें 'व्यास सम्मान' से भी नवाजा गया। यहाँ तक कि उनके समग्र साहित्य को सम्मानित करते हुए उन्हें 'साहित्य भूषण सम्मान' भी दिया गया। आपको दिल्ली प्रशासन के 'शलाका सम्मान' से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त 'डॉ. कामिल बुल्के

पुरस्कार'. 'चकल्लस पुरस्कार', 'अट्टहास शिखर सम्मान', 'साहित्यिक कृति पुरस्कार', 'साहित्य सम्मान', 'मानस संगम साहित्य पुरस्कार', 'उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान पुरस्कार', 'डॉ. हेडगेवार प्रज्ञा सम्मान' तथा 'इलाहाबाद नाट्य संघ पुरस्कार', 'राम कथा सम्मान', 'भाषा भूषण', 'हिंदी गौरव', 'जनवाणी सम्मान' आदि तथा इसके अतिरिक्त भी कई अन्य पुरस्कार आपको प्राप्त हुए हैं।

डॉ. नरेंद्र कोहली ने अपने जन्म एवं जीवन की प्रमुख घटनाओं के संबंध में 'कुछ नरेंद्र कोहली के विषय में' तथा 'नरेंद्र कोहली ने कहा' नामक पुस्तकों में स्वयं लिखा है। इन पुस्तकों के माध्यम से उन्होंने अपने जीवन और साहित्यिक सर्जन का प्रत्येक कोना उजागर कर दिया है। उनके व्यक्तित्व और विचारों का अवलोकन ईशान महेश रचित 'सृजन साधना'[1] पुस्तक में भी किया गया है। ऐसा बहुत कम होता है कि लेखक खुद अपनी कृतियों की रचना-प्रक्रिया के बारे में लिखें। उस मानसिकता को भी प्रकट करें जिसने उस रचना के बनने में आधारशिला का काम किया है। प्रत्येक रचना के मूल में प्रेरणा अलग होती है, रचना का बीज भाव भी अलग होता है। कोहली जी ने अपनी कृतियों के मर्म को पाठक तक पहुँचाने और समझाने का प्रयास भी किया है जैसे 'महासमर' के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने 'जहाँ है धर्म वहीं है जय' पुस्तक लिखी। इसे पढ़कर महासमर को पढ़ने से उसका अर्थ और भी स्फीत हो जाता है।

उसी प्रकार नरेंद्र कोहली जी अपनी सर्जन प्रक्रिया के बारे में 'नरेंद्र कोहली ने कहा' पुस्तक में विस्तार से चर्चा करते हैं–"इसी बीच मैंने 'आतंक' लिखा जो 1972 के अंत में प्रकाशित हुआ। उन दिनों मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं था और मन अत्यंत संवेदनशीलता रडार के समान हर समय झनझनाता रहता था। उसी अति संवेदनशीलता की स्थिति में मैंने अपने समाज और देश में फैले हुए आतंक का अनुभव किया, जिसके मूल में राजनीतिक सत्ता थी।"[2] 'आतंक' उपन्यास के साथ-साथ सर्जक लेखक के मन में रामकथा के चरित्र बनने लगे–" 'आतंक' लिखते हुए तथा उसको लिख झुकने के पश्चात मेरे मन में असहाय बुद्धिजीवी का स्वरूप बहुत सक्रिय रहा था। बुद्धिजीवी का चिंतन, उसकी संवेदनशीलता तथा उसकी असहायता ने बार-बार मुझे रामकथा के पात्र विश्वामित्र की ओर आकृष्ट किया था। विश्वामित्र मुझे अपने बहुत समीप के जीव लगने लगे थे। आज के किसी कॉलेज के प्राचार्य अथवा किसी विश्वविद्यालय के कुलपति। अपनी संस्था को बाहरी दबावों से बचाने के लिए प्रयत्नशील किंतु सामाजिक तथा राजनीतिक भ्रष्टाचार के सम्मुख असमर्थ-असहाय।"[3] यही वे सर्जक मन के संस्कार हैं जिसके द्वारा कोहली जी प्राचीन कथानक को आधुनिक युग बोध से संप्रेरित करते हैं। कोहली जी में सृष्टा के संस्कार उन्हें अपने दायित्व के प्रति सदैव जागरूक रखते हैं। किसी भी रचना के कागज पर उतरने से पहले रचनाकार एक तनाव का, एक छटपटाहट का अनुभव करता है। इस तनाव और छटपटाहट से मुक्ति पाने के लिए ही वह रचना को कागज पर उतारता है। रामकथा की सर्जन प्रक्रिया के संदर्भ में ही कोहली जी आगे लिखते हैं–"रामकथा पर रीझने और खीझने की प्रक्रिया लगातार मेरे मन में चल रही थी। इसी बीच बांग्लादेश में योजनाबद्ध रूप से होने वाली हत्याओं के समाचार मस्तिष्क को झकझोरते रहे और सहसा मुझे लगा कि मेरा मन इन हत्याओं को भी राम कथा में, राक्षसों द्वारा की जाने वाली ऋषि-हत्याओं से जोड़ रहा है। मेरे मन में राम कथा का एक और ही अर्थ उभरने लगा। विभिन्न प्रसंग एक-दूसरे से जुड़ने लगे और अनेक समस्याओं का समाधान आधुनिक संदर्भ में होने लगा। मुझे लगा की सूचनाएँ संवेदनाओं में बदल रही है, मेरा मन पुराकथा तथा वर्तमान युग को समान धरातल पर ले आया है और उनकी सीमाओं का मनमाना अतिक्रमण कर रहा है। मुझे लगा कि मैं राम कथा में समाचार–पत्र और समाचार–पत्र में रामकथा पढ़ने लगा हूँ. .. तभी मैंने रामकथा को लिखने का विचार किया।"[4]

मैं भी अपने लेख को नरेंद्र कोहली की राम विषयक दृष्टि पर ही केंद्रित करने का प्रयास करूँगी। कोहली जी द्वारा राम कथा पर आधारित उपन्यास 'अभ्युदय' नाम से प्रकाशित है किंतु यह एक उपन्यास ना होकर उपन्यास श्रंखला के रूप में अधिक चर्चित है। यह शृंखला सात कड़ियों की है–दीक्षा, अवसर, संघर्ष की ओर, साक्षात्कार, पृष्ठभूमि, अभियान और युद्ध। इस उपन्यास का प्रथम खंड 1975 में प्रकाशित हुआ था तथा अंतिम भाग युद्ध 1979 में प्रकाशित हुआ।

कोहली जी ने रामकथा को आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत किया है। श्री राम की कथा भारतीय समाज में प्रचलित ऐसी आप्तकथा है जिसके मूल्यों को आज भी आदर्श के रूप में देखा जाता है। राम के समान पितृ–भक्ति, भरत के समान त्याग और हनुमान के समान स्वामी–भक्ति आज भी आदर्श के प्रतिमान बने हैं। कोहली जी ने इन चरित्रों के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं की है किंतु दशरथ के चरित्र में काफी परिवर्तन किया गया है। दशरथ एक विलासी राजा है। उनके रनिवास में तीन प्रमुख रानियों के अलावा अनेक और भी थी। अधेड़ दशरथ युवा कैकेयी से भयभीत रहता है और इसीलिए वह कैकेयी को कमजोर करने का षड्यंत्र रचता है। इसका फल यह होता है कि कैकेयी जागरूक हो जाती है और दो वचन माँग बैठती है। यदि दशरथ षड्यंत्र ना करता तो शायद यह स्थिति उत्पन्न न होती। राम दशरथ के प्रिय पुत्र ना होकर एक उपेक्षित राजकुमार हैं।

कोहली जी के राम का चरित्र उदात्त है। 'अभ्युदय' के राम वैयक्तिक द्वेष के कारण कुछ नहीं करते। उनकी वैयक्तिक पीड़ा भी बहुजन–हित साधन का माध्यम बन जाती है। भले ही राम लक्ष्मण का विश्वामित्र के साथ जाने का प्रसंग हो या श्री राम के वनगमन का प्रसंग, कोहली जी ने उसे एक सकारात्मक मूल्य से परिपूरित कर दिया है। यह अपने आप में उदात्त दृष्टि है, एक लंबे समय से शक्तिशाली सत्ताधारियों के द्वारा शोषित, दमित वनवासियों के जीवन के उत्थान की दृष्टि। जो वनवासी अपने तथाकथित

स्वामियों के समक्ष नजर नहीं उठा सकते थे, उनमें श्रीराम और लक्ष्मण ने इतना ओज जागृत कर दिया था कि वे आततायियों का मुकाबला करने के लिए एकजुट हो गए। अत्याचार का मुकाबला एक साथ मिलकर किया जा सकता है या यह कि मनुष्य चाहे तो क्या नहीं कर सकता–इसी नई जीवन दृष्टि का प्रतिपादन अभ्युदय में हुआ है। 'अभ्युदय' में रावण, मेघनाद और कुंभकरण भयावह स्थितियों के प्रतीक हैं। इनका नाश जन की समवेत शक्ति से ही संभव है। यहसोच प्रदान करना कोहली जी का अभिप्रेत है। कोहली जी के राम 'दीक्षा' खंड से लेकर अंतिम खंड 'युद्ध' तक जन के अधिकार की रक्षा के लिए संघर्षरत दिखलाई पड़ते हैं। वे जन को उसका अधिकार प्राप्त करने के लिए तैयार करते हैं। यदि वे न चाहते तो उन्हें अयोध्या से कोई भी निष्कासित नहीं कर सकता था, यहाँ तक की कैकेयी भी और उसके परिजन भी। श्रीराम जब वन में गए वहाँ खदान-मालिक गुह ने उनकी सहायता की पेशकश की तब श्री राम ने कहा–"यह न समझो गुह! कि मैं इतना असमर्थ हूँ या अयोध्या में मुझे इतना भी जन-समर्थन प्राप्त नहीं है कि कोई मुझसे मेरा अधिकार छीन कर मेरी इच्छा के विरुद्ध मुझे निर्वासित कर देता। मैं अपनी इच्छा से न चला आया होता तो कोई इसे संभव नहीं कर पाता।"[5]

कोहली जी की राम कथा का बड़ा भाग जनजातियों की संस्कृति से जुड़ा है। कोहली जी ने इसमें मद्यपान की संस्कृति की बुराइयों और खदानों का प्रसंग भी जोड़ दिया है। मद्य पीकर पत्नी को पीटना खास तौर से निम्न वर्गों में काफी देखा जाता है। 'अभ्युदय' के 'संघर्ष की ओर' खंड में यह प्रसंग भी है। एक खदान–श्रमिक अनिन्द्य अपनी पत्नी को मद्य पीकर पीटता है। श्री राम के मधुर व्यवहार से अनिन्द्य न केवल प्रभावित होता है बल्कि मदिरा न पीने का संकल्प भी लेता है। यह प्रसंग कोहली जी ने आधुनिक युग की एक बड़ी समस्या को उजागर करने के लिए रखा है। वे यह भी कहना चाहते हैं कि मधुर व्यवहार से पशु तुल्य मनुष्य भी मार्ग पर आ सकता है। श्री राम खदानों के स्वामी को मजदूरों के साथ मनुष्य जैसा व्यवहार करने के लिए बाध्य करते हैं। मजदूरों के लिए कुटीर बनवाते हैं। श्री राम ने वनवासियों को आतंक से मुक्त कर निर्भीक जीवन का मंत्र पढ़ाया।श्री राम कहते हैं–"सारे क्षेत्र में, मुझे किसी भी आश्रम में शस्त्र शिक्षा का आभास नहीं मिला, किंतु धर्मभृत्य ने उनके आश्रम में शस्त्र–प्रशिक्षण की बात कही है। मुझे उनकी योजना अच्छी लगी। चेतना, आर्थिक उन्नति तथा आत्मरक्षा। यदि ये तीन मंत्र जनसामान्य तक पहुँच जाए तो फिर उनका शोषण असंभव हो जाएगा।"[6] यह कोहली जी के राम की लोक कल्याणकारी दृष्टि है। इसमें शक्ति, आर्थिक उन्नति तथा शांति का समन्वय है। राम दंडकारण्य में पहुँचकर वनवासियों को राष्ट्र निर्माण और शस्त्राभ्यास की शिक्षा देते हैं। राम कहते हैं–"यदि संघर्ष अनिवार्य है तो उसे और उग्र करना चाहिए ताकि हम न्याय की ओर तीव्रता से बढ़ सके।"[7]

श्रीराम ने सीता की सहायता से दंडकारण्य में निवास करने वाली अनेक स्त्रियों को शिक्षित किया, अपनी रक्षा के लिए समर्थ बनाया, उन्हें अपनी अस्मिता के प्रति जागरूक किया। सोच का यह प्रयत्न पक्ष ही चेतना है। 'अभ्युदय' की सीता भी अपने व्यक्तित्व के प्रति सचेत नारी है। वह आधुनिक तर्कशीला नारी है। समाज कल्याण के लिए वह पति के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करती है। सीता जब वन में जाती है राम वहाँ उसे शस्त्रचालन सिखाते हैं। इस प्रसंग के बहाने कोहली जी एक संदेश देते हैं–स्त्री को अपनी रक्षा के लिए खुद समर्थ बनना चाहिए। इंद्रपुत्र जयंत ने जब सीता को अपनी भुजाओं में बाँध लिया था तब सीता ने भरपूर हाथ का चाटा मारा था। रावण भी सीता को संघर्ष के उपरांत ही ले जा सका था। सीता ने बकायदा रावण के साथ संघर्ष किया था। सीता खदानों की श्रमिक स्त्रियों को शिक्षा देती है, उन्हें जागरूक करती है।वह स्वयं अगस्त ऋषि के आश्रम में शल्य चिकित्सा सीखती है और वनवासी स्त्रियों को भी सिखाती है। अगस्त्य ऋषि श्रीराम से कहते हैं–"तो पुत्र जाने से पहले कुछ बातें ध्यान में रखो। शास्त्रों का तुम्हें पर्याप्त ज्ञान है, फिर भी कुछ दिव्यास्त्रों की शिक्षा तुम लोग इस आश्रम से लेकर ही जाना और पुत्री सीते। तुमने शल्य-चिकित्सा में अपनी रुचि दिखाई है, जब तक यहाँ हो उसका अभ्यास करती रहना। युद्ध के पश्चात शल्य चिकित्सक अनेक घायलों को जीवन दान देता है। पंचवटी से भी अपने कुछ साथियों को प्रशिक्षणार्थ यहाँ भेज देना। आओ अब तुम्हें आशीर्वाद दे दूँ।"[8]

सीता नौका–प्रशिक्षण लेती है और पर्वतारोहण भी सीखती है। सीता के आत्म-उत्कर्ष में राम का स्त्री के प्रति नवीन दृष्टिकोण भी दृष्टिगत होता है। वे स्त्री को आत्मनिर्भर एवं सक्षम बनाना चाहते हैं ताकि वह आत्म रक्षा के लिए स्वयं तैयार रहें। स्त्री शिक्षा, स्त्री को शस्त्र चालन में निष्णात बनाना, राज्य और प्रशासन की युगानुकूल परिकल्पना यह आधुनिक युगबोध है। कोहली जी प्राचीन सामाजिक मर्यादा के पक्ष में नहीं है कि अपहृता स्त्री अग्नि–परीक्षा दे। इसलिए कोहली जी के राम सीता की अग्नि–परीक्षा नहीं लेते। उनके राम सीता से कहते हैं–"आओ सीते! अपने राम से अब और दूर नहीं रहो। एक वर्ष की दीर्घ अग्नि–परीक्षा दी है तुमने।"[9]

श्रीराम की स्त्री विषयक चेतना अहिल्या के प्रसंग में भी देखी जा सकती है। कोहली जी रचित यह प्रसंग परंपरागत रूप से किंचित भिन्न है। इंद्र ने अहिल्या के साथ बलात्कार किया, अहिल्या ने अपनी शक्ति भर विरोध किया। जब गौतम लौटे और अहिल्या की दशा देखी तो उनके चेहरे पर प्रेम, करुणा और संवेदना की छाया ही दिखलाई पड़ती है। वे अहिल्या पर क्रोध नहीं करते उसे कोई शाप नहीं देते वरन वे इंद्र पर कुपित होते हैं और पूरे कृषि समाज के समक्ष अपनी पत्नी के पक्ष में खड़े होते हैं। वे सभी को संबोधित करते हुए कहते हैं–"इंद्र का यह अपराध मेरी धर्मपत्नी के विरुद्ध नहीं, मेरे विरुद्ध है। यह अपराध एक और पवित्र नारी जाति का अपमान है तो दूसरी और आश्रमों की पवित्रता तथा ऋषि समाज की दुर्बलता का उपहास है। यदि नीच इंद्र को इस

अपराध का दंड नहीं दिया गया, तो मेरा विश्वास कीजिए इस पृथ्वी पर स्त्री का सतीत्व सुरक्षित नहीं रहेगा। तपस्वीगण! आप सब प्रबुद्ध, स्वतंत्र एवं न्यायपूर्ण बुद्धि से निर्णय लेने में समर्थ हैं, आपके सम्मुख मैं देवराज इंद्र पर दुश्चरित्र होने का अभियोग लगाकर आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप इस विषय में न्याय करें और इंद्र को देवराज, देव-संस्कृति के पूज्य तथा आर्य ऋषियों के संरक्षक के पद से पदच्युत कर दें।"[10]

कितनी बड़ी विडंबना है कि एक भी तथाकथित ऋषि गौतम के पक्ष में नहीं आया। अहिल्या पुरुष समाज के इस अत्याचार से जड़ होकर रह गई, उसकी संवेदनाएँ कुंठित हो गई, वाक्यांश का व्यंजनापरक प्रयोग किया है। यहाँ अभिधार्थ नहीं लिया जा सकता। संवेदनाओं का मर जाना भी जड़ हो जाना है। श्रीराम ने अहल्या को इस दशा से मुक्त किया। श्रीराम ने अहिल्या को प्रणाम किया और वह अपने आप को भूल गई, अपने परिवेश को भूल गई, वर्षों से मन में जमी ग्लानि किसी अनबूझी प्रक्रिया से कृतज्ञता में परिणत हो गई। ध्यान दें, श्रीराम ने अहिल्या के चरणों का स्पर्श किया। नारी के प्रति यह सम्मान श्रीराम की संस्कृति का महत्त्वपूर्ण मूल्य था।

कोहली जी आधुनिक युगबोध और राष्ट्र निर्माण के रचनाकार हैं। 'अभ्युदय' में कहीं मानवेतर प्राणी नहीं हैं, जटायु, रीछ, वानर आदि वन में निवास करने वाली प्रजातियाँ हैं, मानव वाणी में बोल सकती हैं। श्रीराम युद्ध में इतने घायल हो जाते हैं कि बचने की आशा भी क्षीण हो जाती है। श्री हनुमान संजीवनी का पहाड़ नहीं लाते बहुत सी जड़ी बूटियाँ लाते हैं, उन्हीं को पहाड़ कहा गया है। कोहली जी के राम अवतार नहीं हैं। उनका आचरण युगानुरूप जनजागरण में फलीभूत होता है। यही कारण है कि कोहली जी ने लोकमानसिक तत्वों का पूरी तरह परिहार कर दिया है। 'अभ्युदय' में हनुमान आकाश मार्ग से लंका नहीं जाते, समुद्र के जल में तैरते हुए जाते हैं। ब्रह्मास्त्र एक ऐसा शस्त्र है जो एक बॉक्स जैसा है जिसमें किसी कल को दबाने से अनेक प्रकार के विनाशकारी शस्त्र निकलते हैं। ऋषियों के आश्रमो के वर्णन में, शिवजी के धनुष के वर्णन में, लंका युद्ध के वर्णन में कोहली जी ने घटनाओं की नवीन उद्भावना की है। समुद्र के इस पार से लंका तक पालों वाली नौकाओं में व्यापार करने वाले धनी-मानी श्रेष्ठियों की कल्पना अविश्वसनीय नहीं है, उस पौराणिक युग में इस प्रकार व्यापार रहा होता होगा। नरेंद्र कोहली ने भारतीय संस्कृति की गौरवगाथा को यथावत प्रस्तुत नहीं कर दिया, वरन अपनी रचनाधर्मिता अर्थात सर्जन प्रतिभा से पौराणिक को भी नवयुग में ग्राह्य बना दिया। उन्होंने रामकथा के पात्रों को उनके देशकाल और मनोविज्ञान में रखकर ही सँवारा है। कोहली जी ने दशरथ को पूरी तरह मनोवैज्ञानिक परिवेश में उतारा है शायद इसी कारण उन्होंने कैकेयी को पाठक की संवेदना का पात्र बना दिया है। राम के वनगमन के समय सीता की मनोदशा को भी कोहली जी ने वैज्ञानिक आधार पर प्रतिष्ठित किया है। यहाँ तक कि शूर्पणखा के मनोभावों का भी सच्चाई से वर्णन किया है। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है कि एक पूरा खंड कोहली जी ने शूर्पणखा के प्रसंग को लेकर लिखा है। स्त्री के भीतर जितनी भी कुरूपताएँ हो सकती हैं, उन्हें कोहली जी ने शूर्पणखा में मूर्त कर दिया है।

श्रीराम के वनगमन, लंका युद्ध आदि की कथा सभी जानते हैं किंतु कोहली जी ने उसे नवीन स्वरूप दिया है। 'अभ्युदय' के श्रीराम अवतार नहीं हैं, हाँ उन्हें महामानव कहा जा सकता है। वे जन-जन के उद्धारक, मोक्ष प्रदायक नहीं हैं। अपने ही भय में जकड़े, अपने अस्तित्व तक को भूले जन को उसकी अस्मिता से पहचान कराने वाले श्रीराम हैं। श्रीराम ने साधारण वनवासियों को ही नहीं तपःपूत ऋषियों को भी भयमुक्त किया। त्रेतायुग की कथा को आज के युग में प्रासंगिक बना देना, श्रीराम को जन जागरण का प्रेरक बना देना ही रचनाकार की सामायिकता है। कोहली जी ने श्रीराम के रूप में श्रेष्ठ मानव की अवतारणा की है, यही उनकी सर्जनात्मकता है और रचनाधर्म भी।

कोहली जी का उपन्यास-साहित्य एक विशेष दृष्टि से परिचालित है, यह दृष्टि है समाज को चेतना-संपन्न करने की, लोक के कल्याण चिंतन की और विसंगतियों के समय में राष्ट्र निर्माण की भावना की। ऐसे युगद्रष्टा कथाकार का इस प्रकार इस दुनिया से जाना साहित्य-जगत की अपूरणीय क्षति है। आप पाठकों के दिलों में अपनी कृतियों के माध्यम से सदैव अमर रहेंगे। आपकी साहित्य प्रतिबद्धता सदैव अविस्मरणीय रहेगी।

संदर्भ :

1. ईशान महेश : सृजन साधना, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, सं. 1995, पृ. 23
2. नरेंद्र कोहली : नरेंद्र कोहली ने कहा, शुभम प्रकाशन, दिल्ली, सं. 1997, पृ. 27
3. वही, पृ. 28
4. वही, पृ. 28
5. नरेंद्र कोहली : अभ्युदय (अवसर), हिंद पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, सं. 2004, पृ. 81
6. नरेंद्र कोहली : अभ्युदय (संघर्ष की ओर), हिंद पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, सं. 2004, पृ. 48
7. नरेंद्र कोहली : अभ्युदय (अवसर), हिंद पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, सं. 2004, पृ. 171
8. नरेंद्र कोहली : अभ्युदय (संघर्ष की ओर), हिंद पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, सं. 2004, पृ. 175
9. नरेंद्र कोहली : अभ्युदय (युद्ध), हिंद पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, सं. 2004, पृ. 160
10. नरेंद्र कोहली : अभ्युदय (दीक्षा), हिंद पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली, सं. 2004, पृ. 113

सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर (राज.)
मोबाइल नं. 9950960999
nkntrivedi@gmail.com

RNI No. DELHI/2011/38257

हंस प्रकाशन: 2021 में प्रकाशित महत्वपूर्ण पुस्तकें